

परंपरा और आधुनिकता के बीच में चीटी-हाथी का अंतर है। परंपरा - हमारा कल था। आधुनिकता - आज की प्रतिनिधान है। परंपरा हमें जीना सिखाती है। अब की आधुनिकता हमें जीने का विभिन्न शैति सिखाती है। 'जीना' और 'जीना सीखना' दोनों ही अरूपतमंद हैं। इसका मतलब यह है की परंपरा और आधुनिकता दोनों का उपलब्ध होना मानव जीवन के लिए आवश्यक है।

"गई कल; तूने मुझे जीना सिखाया,  
आनेवाली कल - तू मुझे जीने देगी।"

कवि का कथन किसना ही महुतपूर्ण है। परंपरा और आधुनिकता दोनों आवश्यक है। परन्तु आज क्या हो रहा है? परंपरा के अर्थवाद और आधुनिकता के न्यायवाद ने मिलकर मानव जीवन को विनाश की सीमाओं पर पहुँचा करा है। मानवता की नज़रों के आगे जो कुछ विपरी उभर आया है उन सब के पीछे अहंदोनों का ही बुध है। व्यापार - युद्ध, इच्छा-नीच, काला - गोश, शक्ति - कमज़ोर, वैश्वाला - बेकाम, इन विभिन्न क्षेत्रों में मानवता को किसने बांटा? परंपरा और आधुनिकता ने बांटा। आप शोच रहे होंगे क्यों; स्पष्ट करता हूँ।

जिस परंपरा को जीना सिखाने के वास्ते शोचा गया था, वो तो आज मारना सिखा रहा है। देशा नहीं आपनो किस प्रकार कुल - जाति के

परंपरा को फाड़-तोड़ कर थुद्ध और विद्वेष का पा-  
बनाया गया है। और आधुनिकता जो हमें जीने की  
शीत सिखाने आया था वो तो मारने के विभिन्न  
शीत सिखा रहा है।

ये गलती किसकी है? परंपरा और  
आधुनिकता की? आप को क्या लगता है? मेरे  
आवना में इसमें इन दोनों का नहीं मानव का ही हाथ  
है। शुद्धरणा है मानव को जो कि परंपरा और आधुनिकता  
को "शुद्धरणा 'वस्तु' को नहीं, 'वस्तु' के उपयोगी' को है।"  
महात्मा ने भड़ी कहा था। इस विषय को बड़ों पर  
विश्वाचिह्न रख देते हैं। और चलते हैं इन दोनों की  
असल प्रश्नों में।

आज-कल की दैनिकों और समाचारों में घोष  
विचारों में चर्चा की जाने वाली विषय है "भड़ी  
कोन आधुनिकता क्या था परंपरा।" सच्चाई की ओर  
उँगली अड़ी करना मुश्किल है। हन दोनों की  
टक्कशाहट में भीत-प्रश्यय का कोई स्थान नहीं है।  
परंपरा के प्रचारक कहते हैं कि "परंपरा ही सच है।"  
आज तक हम परंपरा के अनुसार जी रहे हैं और  
कल जी चुसा ही जीना होगा।" जब की आधुनिकता  
के वक्ताव इस प्रकार कहते हैं कि "मानवता को ही  
नहीं शारी जीवन-वृद्धि को बदलाव आवश्यक है।  
आधुनिकता बदलाव की प्रतिक्रिया है।" दोनों ही कथन  
सही लगता है।

कल की सच्चाई जी मुझे आवश्यक है और  
आज का बदलाव जी। समाचारों और दैनिकों की  
छोटी चर्चाओं से उठकर जब में समाज की ओर

देशा तब हुए बस्ती - बाजार में आई और अपने  
आधुनिकता और परंपरा के टकराहट मुझे नज़र पड़ी।  
दो दुकान बाजार में थीं एक में बिक्री है परंपरागत  
तथा और दूसरे में आधुनिक वस्त्र और मौवे  
पाया की दोनों में ही अच्छा खासा बिज़ारी बिकाई  
हो रही है। सच में इन दोनों में कौन है उत्तम  
यह गोल पाना मुश्किल है।

सामाजिक तत्वों के द्वेष में भी कुछ ज्योति।  
बदलाव आपको देखने नहीं मिलेगा। एक तत्व  
जिसे परंपरा के लिए अच्छा होगा वह आधुनिकता  
के नज़रों में बुरा होगा। टकराहट में जीत-पराजय  
की बात नहीं आती। अगर इस बात पर जोश से  
नज़र डाले तो शायद ही दोनों से कोई जीत पायें।

भेष में आधुनिकता की ओँओं से देखता  
हुँ तो फैसा लगता है मार्जों आधुनिकता रही है।  
बदलाव की आवश्यकता के अनुसार बदलना आवश्यक  
है। परंपरा के हाथ पकड़ रहता तो आज भी मैं  
पैंचल धर भाता। आज भी डॉक्टर के पास पहुँचने  
के लिए मुझे बैल गाढ़ी चाहिए होती। आधुनिकता  
को अपनाया न होता तो आकाश में उड़ना मैं लिए  
नहीं की बात होती। मिनटों में तुश कहीं जाना  
अपनों की बात रह जाती। सच में आधुनिकता के  
बींगा क्या मनुष्य जीवन? पर भेष आधुनिकता को  
अच्छाई की ओँओं से नज़र हटाकर भेष बुराई  
पर नज़र डाला तो मैश दिल थम गया। थुद्द,  
विनाश, आपत, विपत्ति, श्रष्टाचार आदि से अरा  
क्षण लगा मार्जों आज तक की आधुनिकता के प्रति

मेरा सोच गलत था। सच्चाई कुछ और ही है,

आधुनिकता की दुर्घटनों को निखरदास  
करके अब मेरे परंपरा की ओरों से ढका वाह!  
परंपरागत वस्त्र पहनकर चलती महिलायें; भड़क  
की मिट्टी में खेलते बच्चे, प्रार्थना करती वृद्ध  
स्त्रीयाँ, अब कितना अच्छा और विचारात्मक शीति शे  
यल रहा था। परंपरा की सुख, उसका स्वरूपता,  
अब मेरे लिए कौतुक का नवीन रूप नहीं आ रहा  
था। परंतु परंपरा में भी कुछ अशुभ वृक्षतुताओं  
पर मेरा नहीं पड़ा। किसी व्यक्तियों के प्रबलता  
के लिए तोड़ी गई पारम्परिक नियमों। बेकाम, बेशजकरी  
और धनहीनता से जु़रू मरते मानवता। अहीं लेपन  
न मिलने के कारण मरते लोगों को भी मैं निखरदास  
न कर सकता था।

आधुनिकता और परंपरा दोनों में भी  
अगुण और दुर्घटना थी। अहीं कौन यह चुन पाना  
शंखव न था। इस टक्कराहट में जीत का लक्ष  
रूप समाज किसे शोंपेगा? पता नहीं? दोनों ही  
शक्ति हैं और 'कम्पोर' भी।

सोच की दिशा को आगे बढ़ाने पर पता  
चला की इस टक्कराहट की ज़रूरत ही क्या है? इस  
इस चर्चा से क्या प्राप्त होगा? परंपरा और  
आधुनिकता की इस टक्कराहट के बीच में पहकर  
तोड़ रहा है कौन-मानवता। मानवता इस  
गर्भण की बीच में पहकर मर रहा है। और  
उम उस सच्चाई को निखरदास करके किसी

ज्ञानवशाक वस्तुताओं के पीछे आग रहे हैं।

सर्वाई की ओर नज़र डाले तो परंपरा  
और आधुनिकता है क्या? - वे तो समय के  
विभिन्न द्वे द्वे हैं जो भी और जिनकी शीत  
सिखाने के लिए बने हुए हैं। उन द्वेष वे दोनों  
की टक्करहट में भीत की घासी लगाने वाले को  
पकड़कर हम करेंगे क्या? क्या होगा इस प्रतियोग  
का परिणाम और प्रभाव? - शून्यता।

भमणा और समजाना, परंपरा या आधुनिकता  
को नहीं है; भमणा मानवता और मानवशशी को है की  
थह दों प्रभावपूर्ण आशयों की टक्करहट में दूट ~~के~~ ने  
वाली चीज़ तो वह छुद है - मानवता। बात सरल और  
भाष्ट है; ~~के~~ हमें इन दोनों की संगुण - दुर्गुण पर  
विचिन्तन कर के समय को ~~के~~ हवा में नहीं उड़ाना है।  
परन्तु इन दोनों में से जो कुछ अच्छा और स्वरूप  
प्राप्त हो उसे अपनाकर ~~के~~ आगे की ओर बढ़ना है।  
बस एक विश्व साहित्यकार की बात याद रखों  
"कृष्णी कोई परंपरा नहीं है जो बदलती न हो,"  
कल की धरनाओं को देखो; जो बुश उन्हें शूल  
आओं जो स्वरूप उसे अपने आगोश में ले लों  
और आज की इस धंते में खियो। वर्षोंकी सर्वाई  
कल की परंपरा ~~के~~ में न था। वर्षोंकी सर्वाई आनेवाली

आद्युनिकता में न था। सच तो था मरे पास मरे  
आप में ही सच था। लाकी सब व्यर्थ और अर्थशून्य।

अमरिका के ईडिटो जोकी भी आनंदी लणी ने  
एक बार चौसा एक कथन किया था "समय ~~अवधि~~ धौव  
को मिटा शकती है परन्तु ~~जो~~ उस से भी तेजी  
से यार आवं मिटाती है।" अर्थशून्य अर्थहीन तकराहट  
में जो ~~कुछ~~ धाव पहुँचा है उस धाव को यार  
और मानवता से साँख्य दिलाने पर ध्यान देना है।

परंपरा और आद्युनिकता के बिच में कुत्ता  
क्वल कुड़ा ने बनो तुम मानव; उन दोनों के बीच  
बीच में अपने आप को कुचलने न दो तुम मानव।  
व्यर्थ को छोड़े अर्थ को हुंडों।

---